राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय

स्कूल स्तर कथक पाठ्यक्रम अंक विभाजन

MARKING SCHEME OF SCHOOL LEVEL

Kala Ratna Diploma in performing art- (K.R.D.P.A.)

2023 -24 (Regular)

Previous

PAPER	SUBJECT - Kathak	MAX	MIN
1	Theory - 1 History and Development of Indian dance	100	33
2	Theory - II Essay composition, rhythmic pattern and principles of practical	100	33
3	PRACTICAL - I Demonstration & Viva	100	33
4	PRACTICAL - II Stage Performance	100	33
	GRAND TOTAL	400	132

कला रत्न डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट– प्रथम वर्ष

कथक नृत्य

शास्त्र – प्रथम प्रश्न पत्र

समयः– 3 घन्टे **पूर्णांकः– 100**

1. कथक नृत्य का उद्भव एवं विकास।
2. अश्टनायिकाओं का विस्तृत अध्ययन।
3. अभिनय दर्पण के अनुसार असंयुक्त एवं संयुक्त हस्त भेदों का अध्ययन एवं कथक नृत्य में उनका महत्व।
4. नवरस की विस्तृत व्याख्या।
5. अभिनय दर्पण के अनुसार 'दशावतार हस्त' का ज्ञान।
6. देवदासी प्रथा का इतिहास एवं भारतीय नृत्यों के विकास में उसका योगदान।
7. लखनऊ के नवाब वाज़िद अली शाह एवं रायगढ़ के राजा चक्रधर सिंह के कार्यकालों का विशेष उल्लेख करते हुए मुस्लिम एवं हिन्दू दरबारों में कथक नृत्य का उद्धार एवं पुनर्विकास की जानकारी।
8. लोकधर्मी, नाट्यधर्मी एवं पूर्वरंग का अध्ययन ।
9. सोलह श्रृंगार एवं बारह आभूषणों की जानकारी एवं कथक नृत्य में उनके महत्व का ज्ञान।

कला रत्न डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट– प्रथम वर्ष

कथक नृत्य

शास्त्र – द्वितीय प्रश्नपत्र

समयः– 3 घन्टे **पूर्णांकः–100**

1. नृत्य से संबंधित सामान्य विषयों पर निबन्ध।
2. प्रायोगिक पाठ्यक्रम में उल्लिखित तालों के ठेकों एवं उनमें तोड़े, परन, कवित्त, तिहाई आदि लिपिबद्धकरने का अभ्यास।
3. दिए गये कथानकों में निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर नृत्य संरचना करने का अभ्यास :–कालिया दमन, द्रोपदी वस्त्र हरण एवं अभिसारिका नायिका।

बिन्दु– संक्षिप्त कथावस्तु, रंगमंच व्यवस्था, पात्र चयन, वेशभूषा, रूप–सज्जा , पार्श्वसंगीत, ताल एवं रस।

4. हरियाणा प्रदेश के लोकनृत्यों का अध्ययन। (इतिहास, प्रस्तुति क्रम, वेशभूशा व वद्य यंत्रो के संदर्भ में)
5. निम्नलिखित पारिभाशिक शब्दों का ज्ञान। (उरमई, उरप, सुलप या सुलूप, तिरप, लागडाट, सप्त पदार्थ, सप्त माल, अनुलोम, प्रतिलोम)
6. भारतीय रंगमच का स्वरूप एवं परम्परा (इतिहास, प्रकाश व्यवस्था, प्रेक्षाग्रह के संदर्भ में)
7. नर्तक, नर्तकी के गुण दोश विवेचन।
8. निम्नलिखित अप्रचलित तालों का परिचात्मक अध्ययन (ताल पंचम सवारी, रूद्र ताल)

प्रायोगिक – वायवा

1. गुरू वंदना, शिव वंदना, एवं सरस्वती वंदना में से किन्हीं दो से संबंधित श्लोक पर भाव प्रदर्शन।
2. ठाठ का विस्तृत प्रदर्शन।
3. त्रिताल में नृत्य पक्ष के सम्पूर्ण बोल, कवित्त एवं तिहाईयों के विविध प्रकारों के साथ लगभग आधे घन्टे तकउच्चस्तरीय नृत्य प्रदर्शन की क्षमता।

4. किन्हीं पाँच गत निकासों का प्रदर्शन।
5. निम्नलिखित में से किन्हीं दो गत भावों का प्रदर्शन :–
   कालियादमन, माखन चोरी एवं होली।
6. विविध प्रकार के तत्कार एवं लयबाँट आदि की प्रस्तुति।
7. किसी एक पर भाव प्रदर्शन – तराना एवं भजन।
8. निम्नलिखित में से किसी एक ताल में निम्नानुसार नृत्य करने का अभ्यास :–
   पंचम सवारी (15–मात्रा), एवं रूद्र (11–मात्रा) में ठाठ एक आमद, तीन तोड़े, दो परन, दो चक्करदार तोड़ेअथवा परन, एक कवित्त एवं तत्कार।

प्रायोगिक – मंच प्रदर्शन

आमंत्रित दर्शकों के समक्ष लगभग एक घण्टे तक उच्चस्तरीय नृत्य का मंच प्रदर्शन।

आंतरीक मूल्यांकन

आवश्यक निर्देश–: आंतरीक मूल्यांकन के अन्तर्गत प्रत्येक सेमेस्टर एवं प्रत्येक कोर्स के विद्यार्थियों को प्रायोगिकपरीक्षा के समय दो फाईल प्रस्तुत करनी होगी।

1. कक्षा में सीखे गये रागो की स्वर लिपि/तोड़ो का विवरण
2. विश्वविद्यालय एवं नगर में आयोजित संगीत कार्यक्रमो की रिर्पोट

Kala Ratna Diploma in performing art- (K.R.D.P.A.)

(Regular)
Final

PAPER	SUBJECT - Kathak	MAX	MIN
1	Theory - 1 History and Development of Indian dance	100	33
2	Theory - II Essay composition, rhythmic pattern and principles of practical	100	33
3	PRACTICAL - I Demonstration & Viva	100	33
4	PRACTICAL - II Stage Performance	100	33
	GRAND TOTAL	400	132

कला रत्न डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट–अंतिम वर्ष

कथक नृत्य

शास्त्र – प्रथम प्रश्नपत्र

समयः– 3 घन्टे **पूर्णांकः– 100**

1. कथक नृत्य के विभिन्न घरानों का परिचयात्मक ज्ञान एवं उनकी शैलीगत विशेषताओं का अध्ययन।

2. मंदिरों में नृत्य की प्राचीन परंपरा का अध्ययन।

3. ताल के दस प्राणों का विस्तृत अध्ययन।

4. गुरू शिष्य परम्परा एवं उसका महत्व ।

5. गुजरात प्रदेश के लोकनृत्यों का अध्ययन (इतिहास, प्रस्तुति क्रम, वेशभूशा व वाद्य यंत्रो के संदर्भ में)

6. अष्टनायिका एवं चार प्रकार के नायक का विस्तृत अध्ययन।

7. अभिनय दर्पण के अनुसार देव हस्तों का ज्ञान।

8. 'बैले' (नृत्य नाटिका) का उद्भव एवं विकास तथा कथक नृत्य में उसका योगदान।

9. कथक नृत्य के भावपक्ष में विषय वस्तु एवं उनकी प्रस्तुति की विविधता का ज्ञान :–

वंदना, गतभाव, ठुमरी, भजन, कवित्त।

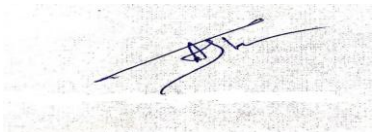

कला रत्न डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट–अंतिम वर्ष
कथक नृत्य
शास्त्र – द्वितीय प्रश्नपत्र

समयः– 3 घन्टे **पूर्णांकः– 100**

1. नृत्य से सम्बधित सामान्य विषयों पर निबंध।
2. प्रायोगिक पाठ्यक्रम के अन्तर्गत सीखे गये तालों के ठेके एवं उनमें तोड़े, परन, कवित्त, तिहाई आदि लिपिबद्ध करने की क्षमता।
3. नीचे दिये गये कथानकों में निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर नृत्य संरचना करने का अभ्यास।

   खण्डिता नायिका एवं सीता हरण ।

   बिन्दु :– संक्षिप्त कथा वस्तु, रंगमंच व्यवस्था, पात्रचयन, वेशभूषा, रूप–सज्जा, पार्श्व संगीत, ताल एवं रस।

3. आड़, कुआड़, विआड़ को पाठ्य की तालों में लिखने की क्षमता।
4. भाव प्रर्दशन की विधियां। (नयनभाव, बोलभाव, अर्थभाव, सभाभाव, नृत्यभाव, गत अर्थभाव, अंगभाव)
5. अप्रचलित तालो का अध्ययन। (शिखर ताल और बसंत ताल)
6. पाश्चात्य नृत्य कला का अध्ययन। (बैले, आपेरा)
7. अभिनय दर्पण के अनुसार संयुक्त एवं असंयुक्त हस्त मुद्राऐं।

कला रत्न डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट–अंतिम वर्ष
कथक नृत्य
प्रायोगिक – वायवा

1. पिछले पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति।
2. गणेश वंदना एवं कृष्ण वंदना से सम्बंधित श्लोकों में भाव प्रदर्शन।
3. त्रिताल में निम्नानुसार नृत्य अभ्यास :–

   तिस्त्र एवं मिश्र जाति की परन, दर्जा, फरमाईशी चक्करदार, नवहक्का, गणेश परन, शिव परन, अतीत,अनागत के तोड़े या परन विभिन्न प्रकार के कवित्त।
4. विभिन्न प्रकार के तत्कार एवं लयबाँट आदि का प्रदर्शन।
5. घूँघट एवं मुरली के विविध प्रकारों का गतनिकास के साथ अभ्यास।
6. निम्नलिखित में से दो गतभावों का अभ्यास :–

   भस्मासुर, द्रोपदी वस्त्रहरण एवं नायिका भेद।

7. बसंत (9–मात्रा), शिखर (17–मात्रा) में से किन्हीं एक ताल में निम्नानुसार नृत्य करने की क्षमता :–ठाठ, एक आमद, तीन तोड़े, दो परन, दो चक्करदार तोड़े और परन, एक कवित्त एवं तिहाई आदि।
8. चतुरंग या तिरवट पर नृत्य प्रदर्शन।

9. ठुमरी और भजन पर भाव प्रदर्शन।

कला रत्न डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट–अंतिम वर्ष

कथक नृत्य

प्रायोगिक – मंच प्रदर्शन

आमंत्रित दर्शकों के समक्ष उच्चस्तरीय नृत्य का मंच प्रदर्शन।

संदर्भित पुस्तकें :–

1. अभिनय दर्पण (डॉ. वाचस्पति गैरोला)
2. भारतीय संस्कृति में कथक परम्परा (डॉ. मांडवी सिंह)
3. कथक नृत्य शिक्षा भाग दो (डॉ. पुरू दाधीच)
4 कथक मध्यमा(डॉ. भगवानदास माणिक)
5. कत्थक दर्पण (पं. तीरथराम आजाद जी)
6. कत्थक ज्ञानेश्वरी (पं. तीरथराम आजाद जी)
8. ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में कथक नृत्य (डॉ. माया टाक)
9. कथक नृत्य का मंदिरों से संबंध–जयपुर घराने के विशेश संदर्भ में (डॉ अंजना झा)

आंतरीक मूल्यांकन

आवश्यक निर्देश–: आंतरीक मूल्यांकन के अन्तर्गत प्रत्येक सेमेस्टर एवं प्रत्येक कोर्स के विद्यार्थियों को प्रायोगिक

परीक्षा के समय दो फाईल प्रस्तुत करनी होगी।

1. कक्षा में सीखे गये रागो की स्वर लिपि/तोड़ो का विवरण
2. विश्वविद्यालय एवं नगर में आयोजित संगीत कार्यक्रमों की रिर्पोट